



# महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)-273165



## समाचार – पत्रिका

अंक-02

फरवरी, 2021

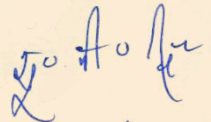
प्रो. उदय प्रताप सिंह  
उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति  
गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान  
गोरखनाथ, गोरखपुर

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र  
एक नजर में

### संदेश

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहुँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।

  
(उदय प्रताप सिंह)



कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रूप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता है।

### 1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	प्रशिक्षण की सं.	लाभार्थी संख्या
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	20	523
ख) प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	02	40

### 2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल हे०/ सं०	लाभार्थी संख्या
क) बरसीम हरा चारा	04	32
ख) चना (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन RVG 202)	10	25
ग) मसूर (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन IPL 316)	05	12
घ) सरसो (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन DRMRIJ 31, RH749)	46.66	115
ङ) जौ (RD 2907)	4.0	10
च) केचुआ खाद पर प्रदर्शन	0.0015	05
छ) सरसो (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, सल्फर, DRMRIJ 31, RH749)	2	14
ज) चना (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, बोरान, RVG 202)	2.5	10

### 3. प्रक्षेत्र परीक्षण

शीर्षक	संख्या लाभार्थी
क) पशुओं में दुग्ध उत्पादन में अजोला का मूल्यांकन	05
ख) मटर प्रजाति काशी नन्दिनी का 0.5 हेक्टेअर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
ग) मिर्च का प्रजाति काशी अनमोल का 0.5 हेक्टेअर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
घ) चने पर फास्फोरस घोलक जीवाणु व राइजोबियम जैव उर्वरक के प्रभाव का मूल्यांकन 0.6 हे. में 3 किसानों के यहां चल रहा है	03
ङ) गेहूँ की नयी विमोचित प्रजाति करण वंदन ( DBW 187) का मूल्यांकन	05

### 4. प्रसार गतिविधियां

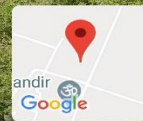
शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
क) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	36	88
ख) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	44	168
ग) मोबाइल सलाह	84	125
घ) समाचार पत्र प्रकाशन	55	सामूहिक
ङ) अन्य कार्यक्रम	5	115

## समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम

❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत सरसों की फ़सल का 46.66 हे क्षेत्रफल में 115 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे सरसों की उन्नतशील प्रजाति का बीज गिरिराज (डीआरएमआर-आईजे 31) एवं आर.एच. 749 कृषको को दिया गया और साथ ही साथ इसके खेती के बारे में प्रशिक्षित किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत चना की फ़सल का 10 हे क्षेत्रफल में 25 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे चने की उन्नतशील प्रजाति RVG 202 का बीज कृषको को दिया गया और साथ ही साथ इसके खेती के बारे में प्रशिक्षित किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



Rampur Gopalpur, Uttar Pradesh, India  
 Unnamed Road, Rampur Gopalpur, Uttar Pradesh 273007, India  
 Lat N 26° 52' 49.1556"  
 Long E 83° 20' 22.9992"  
 23/01/21 12:50 PM

❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत मसूर की फ़सल का 05 हे क्षेत्रफल में 12 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे मसूर की उन्नतशील प्रजाति IPL 316 का बीज कृषको को प्रदर्शन हेतु वितरित किया गया, इसके साथ ही मसूर की उत्पादन तकनीक के बारे में प्रशिक्षित भी किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



## अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम

- ❖ अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत डॉ. विवेक प्रताप सिंह वि.व.वि.-पशुपालन द्वारा 32 कृषकों के 4.0 हे क्षेत्रफल में बरसीम की मस्कावी प्रजाति का प्रदर्शन किया गया है इसकी औसत हरा चारा उत्पादन 900 से 1000 क्विंटल प्रति हे. है। यह बुआई के 40-45 दिनों के बाद कटाई योग्य हो जाति है।



- ❖ भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा आवंटित अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा जौ की फ़सल का 04 हे क्षेत्रफल में 10 कृषकों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमें जौ की उन्नतशील प्रजाति RD 2907 का बीज कृषकों को प्रदर्शन हेतु वितरित किया गया, इसके साथ ही जौ की उत्पादन तकनीक के बारे में प्रशिक्षित भी किया गया. वर्तमान में कृषक प्रक्षेत्र पर फ़सल अच्छी चल रही है।



Rampur Gopalpur, Uttar Pradesh, India  
 Unnamed Road, Rampur Gopalpur, Uttar Pradesh 273007, India  
 Lat N 26° 52' 40.7172"  
 Long E 83° 20' 21.7356"  
 23/01/21 12:35 PM

## प्रक्षेत्र परीक्षण

- ❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 10-02-2021 को राखुखोर गाँव में रामनेवास मौर्या के प्रक्षेत्र पर जीवामृत खाद पर चल रहे प्रक्षेत्र परीक्षण का भ्रमण



- ❖ केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक- 08/02/2021 को जंगल कौड़िया विकास खंड के गाँव चौकमाफी में काशी नन्दिनी प्रजाति का प्रक्षेत्र परीक्षण के अंतर्गत भ्रमण किया गया। इसी के साथ ही साथ फसल का आकलन किया जा रहा है।



❖ दिनांक- 23/01/2021 को चने पर बोरोन का प्रभाव का प्रदर्शन डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय वि.व.वि.-मृदा विज्ञान द्वारा 04 कृषकों के 1.0 हे क्षेत्रफल में RVG 202 प्रजाति का किया गया। जिसमें बोरोन उर्वरक प्रयोग व कृषक पद्धति का चने पर प्रभाव तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया। इसी के साथ ही साथ फसल का आकलन किया जा रहा है।

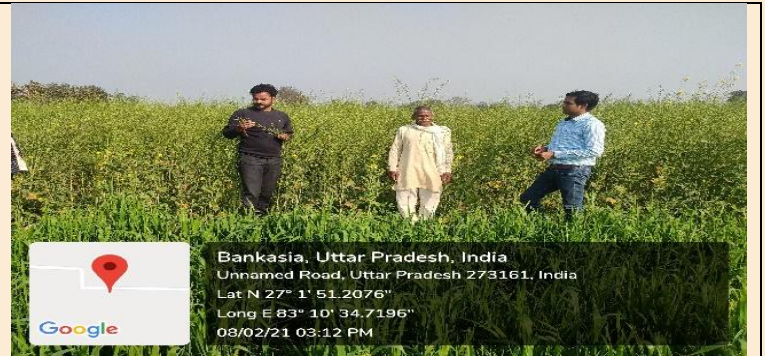


❖ केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान, श्री अरुनीश कुमार सिंह, द्वारा गेहूँ की नयी प्रजाति करण वंदन ( DBW 187) का मूल्यांकन 05 कृषकों के प्रक्षेत्र पर 5000 वर्ग मीटर में मूल्यांकन कार्यक्रम चल रहा है जिसमें प्रजाति की वृद्धि, विकास एवं उत्पादन क्षमता का परीक्षण किया जा रहा है।



## प्रक्षेत्र भ्रमण

❖ दिनांक-08.02.2020 को कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ- शस्य विज्ञान, द्वारा ग्राम-सोनौरा ब्लॉक- कैम्पियरगंज में समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन दलहन एवं तिलहन योजनान्तर्गत, चना की उच्चउत्पादक प्रजाति RVG 202 एवं सरसों की उच्चउत्पादक प्रजाति RH 749 का प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया।



❖ दिनांक-17.02.2020 को कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ- शस्य विज्ञान, द्वारा ग्राम-रखुखोर, ब्लॉक- कैम्पियरगंज में समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन दलहन एवं तिलहन योजनान्तर्गत, चना की उच्चउत्पादक प्रजाति RVG 202 एवं सरसों की उच्चउत्पादक प्रजाति RH 749 का प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया।



## कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक- 10/02/2021 को भरोहियाँ विकास खंड के राखुखोर गाँव में “ गेहूँ की फसल में कीट एवं रोग प्रबंधन” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण तथा प्रक्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया।



❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा जनपद के प्रसार कर्मचारियों हेतु केंद्र के प्रशिक्षण हॉल में दिनांक- 09/02/2021 को “किसान उत्पादक कंपनी के निर्माण एवं संवर्धन” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया।



❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक- 16/02/2021 को भरोहियाँ विकास खंड के कल्यानपुर गाँव में “किसान उत्पादक कंपनी के निर्माण एवं संवर्धन” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया।



❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक- 16/02/2021 को भरोहियाँ विकास खंड के कल्यानपुर गाँव में “किसान उत्पादक कंपनी के निर्माण एवं संवर्धन” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया।



❖ केंद्र के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक- 27/02/2021 को जंगल कौड़िया विकास खंड के बौरडीह गाँव में “ जायद में भिन्डी की उन्नतशील खेती” विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया।



❖ 3, 10, 17, 19 व 24 फरवरी 2021 को जंगल कौड़िया, नचनी, राखुखोर, बेलघाट समेकित कृषि प्रणाली, बकरी पालन, कृषक उत्पादन संगठन जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया



## किसान मेला एवं गोष्ठी

❖ कृषि विभाग, गोरखपुर द्वारा दिनांक 19-02-2021 को भरोहियाँ विकास खंड के राखुखोर गाँव में आयोजित किसान गोष्ठी में केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा “एकीकृत फसल प्रणाली” विषय पर व्याख्यान दिया गया I इस अवसर पर सहजनवा विकास खंड के कुल 50 से भी ज्यादा किसानों ने प्रतिभाग किया I



❖ केंद्र कि गृह वैज्ञानिक डॉ. श्वेता सिंह द्वारा दिनांक-3/02/2021 को कम्पियर्गज विकास खंड के नवाडीह गाँव में “पोषण वाटिका” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया I



❖ केंद्र के गृह वैज्ञानिक डॉ. श्वेता सिंह द्वारा दिनांक 20-02-2021 को भट्टहट ब्लॉक के अतरौलिया व तर्कुलाही गाव में “ फलो व सब्जियों के मूल्य संवर्धन” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया



❖ केंद्र के गृह वैज्ञानिक डॉ. श्वेता सिंह द्वारा दिनांक 27-02-2021 को कम्पियर्गज ब्लॉक के करिबनगर गाव में “अनाजो के मूल्य संवर्धन” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया



❖ केंद्र के गृह वैज्ञानिक डॉ. श्वेता सिंह द्वारा दिनांक 5-02-2021 को icici फाउंडेशन द्वारा गोरखपुर जिला कारगर में कैदियों “ पोषण वाटिका” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण दिया गया



## अभिनव पहल: महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र पर क्राप कैफेटेरिया

क्राप कैफेटेरिया प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और मूल्यांकन की प्रक्रिया में सूत्रधार की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसानों, ग्रामीण युवाओं, छात्रों और विस्तार अधिकारियों को तकनीकी ज्ञान का प्रसार करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी के साथ-साथ 'कर के सिखिए और देख के विश्वास करिये' के विचारों के आधार पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है। कृषि विज्ञान केन्द्र चौकमाफी के विषय वस्तु विशेषज्ञ – सस्य विज्ञान, श्री अवनीश कुमार सिंह ने क्राप कैफेटेरिया के माध्यम से कृषक समुदायों के बीच उत्पादन तकनीक के लिए गेहूं, चना, सरसों, मसूर, मक्का और जौ का मूल्यांकन और लोकप्रिय बनाने के लिए एक अभिनव पहल किया है। गेहूं की बारह किस्में (HD 3237, HD 2985, HD 3043, HD 3118, HD 3271, HD 3086, HD 2967, PBW 725, DBW 154, PBW 343, DBW 187, DBW 252), सरसों की दस किस्में (PM 30, PM 31, PM 27, PM 26, PM 25, PM 28, P. Jagarnath, P. Mahak, P. Vijay, MJ 11, मसूर की दो किस्में (L 4727, L4717), चने की नौ किस्में (Pusa 362, Pusa 3062, Pusa 3043, Pusa 372, Pusa 3022, Pusa 547, Pusa 72, RVG 202, RVG 202, मक्का की चार किस्में MM9440, MM9488, 9441, 9443, और विभिन्न प्रकार की रबी फसलें बोई गई हैं। क्राप कैफेटेरिया कृषि समुदायों और विस्तार के अधिकारियों के दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान को बदल रहा है।

### कृषक उत्पादक संगठन का निर्माण

दो कृषक उत्पादक संगठन का निर्माण कराया गया जिसमें से एक "नयागांव लाइवस्टॉक एंड एग्रीकल्चर प्रोड्यूसर कंपनी लि." एवं दूसरा "श्री गोरखनाथ फार्मर्स मलउर प्रोड्यूसर कंपनी लि." का निर्माण कराया गया जिसमें शेयर होल्डर्स जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।

### जनपद के कृषकों/प्रसार कर्मियों/छात्रों द्वारा मधुमक्खी पालन इकाई का भ्रमण





### फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

#### मूँग/ उर्द

- ❖ ग्रीष्मकालीन मूँग/ उर्द की बुवाई 15 मार्च से 15 अप्रैल तक करनी चाहिए। जिन किसान भाइयों के पास सिंचाई की सुविधा है वे फरवरी के अंतिम सप्ताह से भी बुवाई शुरू कर सकते हैं। बसंतकालीन मूँग/ उर्द की बुवाई मार्च के प्रथम पखवाड़े में करनी चाहिए। बोनी में देरी होने पर फूल आते समय तापमान में वृद्धि के कारण फलियां कम बनती है, इससे इसकी पैदावार प्रभावित होती है।
- ❖ बीज की मात्रा 10 किग्रा/एकड़ रखें।
- ❖ बुवाई के समय फफूंदनाशक दवा से 2 ग्राम/कि.ग्रा. की दर से बीजों को शोधित करें। इसके अलावा राइजोबियम और पी.एस.बी. कल्चर से (200 ग्राम) बीज शोधन अवश्य करें। 10-12 किलोग्राम बीज के लिए यह पर्याप्त है।
- ❖ पहली सिंचाई 20-25 दिनों में करें। इसके बाद 10-12 दिनों के अंतराल में सिंचाई करें। इस प्रकार कुल 3 से 4 सिंचाइयां करें। यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि, फूल आने की अवस्था तथा फलियां बनने पर सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

#### गेहूँ

- ❖ इस माह तापमान बढ़ने के दशा में गेहूँ में बीमारियां नजर आने लगती है, जिनमें पीला रतुआ या धारीदार रतुआ, भूरा रतुआ या पत्तों का रतुआ तथा काला या तने का रतुआ रोग प्रमुख है। इन रोगों के रंगदार धब्बे पत्तों व तनों पर नजर आते हैं। बीमारी नजर आते ही अजाक्सीस्ट्रोबीन 18.2%+ डाईफेनाकोनाजोल 11.4% एस.सी. 1मिली/ली. या प्रोपिकोनाजोल 1 मिली/ली. पानी की दर से घोल का 2-3 छिडकाव 10-12 दिन के अंतराल पर करना चाहिए।
- ❖ गेहूँ के खेत में चूहों का प्रकोप होने पर जिंक फास्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया का प्रयोग करें।

#### दलहनी फसलें :

- ❖ चना, अरहर, मटर एवं मसूर की फसल को फली छेदक कीट का प्रकोप अधिक होता है। इस कीट की नवजात सुड़ियाँ, पत्तियों, कलियों तथा फूलों को तेजी से खाती है जबकि परिपक्व सुड़ियाँ फलियों में गोलाकार छेद बनाकर दाना खाती है। फली खाते समय सुड़ियों का आधा भाग ग्रसित फली के बाहर लटका रहा होता है जो कीट का महत्वपूर्ण लक्षण है। कलियाँ बनने से लेकर फलियाँ पकने तक इस कीट का प्रकोप अधिक होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु कीट भक्षी पक्षियों के बैठने के लिए खेत में टी (T) के आकर के डंडे (15-18/एकड़) लगाने चाहिए। फसल से कीट नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5% SG की 200-250 ग्राम दावा को 600-750 लीटर पानी में घोलकर या स्पिनोसेड 45 एस.सी. की 200 मिली दावा को 600 लीटर पानी में घोलकर या इंडोक्साकार्ब 15.8 % ई.सी. 500 मिली.दावा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में छिडकाव करना चाहिए। नियंत्रण के लिए बताई गई दवाओं में से किसी एक दवा का छिडकाव 50 % फूल आने पर तथा 50 % फली आने पर छिडकाव करना चाहिए।

#### राई

- ❖ सरसों की फसल में माहूँ कीट का प्रकोप अधिक होता है जिससे पैदावार में भारी कमी आती है। बड़ी संख्या में होने के कारण यह कीट कम समय में फसल को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। यदि आप सरसों की खेती कर रहे हैं तो एफिड की

पहचान, कर इससे होने वाले नुकसान से समय रहते बचाया जा सकता है। यह कीट भूरे एवं काले रंग के होते हैं। इसकी लंबाई 1 से 1.5 मिलीमीटर होती है। यह कीट सरसों के फूलों एवं कोमल फलियों का रस चूसते हैं। जिससे फूलों की संख्या में कमी आती है एवं फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं। प्रकोप बढ़ने पर पौधों का विकास रुक जाता है। इसके रोकथाम हेतु प्रति एकड़ खेत में 5-6 पीली स्टिकी ट्रेप लगाएं। इस कीट पर नियंत्रण के लिए प्रति लीटर पानी में 1 मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड मिलाकर छिड़काव करने से इस कीट पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा 15 लीटर पानी में 12 से 15 मिलीलीटर टाटामिडा मिलाकर छिड़काव करने से भी इस कीट पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। आवश्यकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर दोबारा छिड़काव करें।

### मौनपालन

- ❖ सरसों में फूल खिलने के दशा में प्रक्षेत्र का चयन कर, ,मौनवंशों का समय से माईग्रेशन करें
- ❖ मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोटैशियम परमैंगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें
- ❖ माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें
- ❖ अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो।
- ❖ गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए।

### पशुपालन

- ❖ पशु आरोग्य – मुँह में छाले पड़ने पर सुहागा के चूर्ण को पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए या फिर पोटैश को ठंडे पानी में मिलाकर मुँह की सफाई करनी चाहिए। ग्लिसरीन और बोरिक एसिड का पेस्ट बनाकर जीभ के उपर छालों पर लगानी चाहिए। मुँह को खोल कर मुँह के अंदर तथा जीभ पर मक्खन लगाने से आराम महसूस होता है। उपर लिखे सारे उपचार को दिन में तीन से चार बार परिस्थिति के अनुरूप दोहराते रहना चाहिए।
- ❖ खुरपका-मुँहपका का टीका लगवाकर पशुओं को सुरक्षित करें। जिन पशुओं में जुलाई अगस्त में टीका लग चुका है, उन्हें फिर से टीके लगवायें।
- ❖ दुधारू पशुओं के लिये उनके आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ खुरपका-मुँहपका का टीका लगवाकर पशुओं को सुरक्षित करें।
- ❖ जिन पशुओं में जुलाई अगस्त में टीका लग चुका है, उन्हें फिर से टीके लगवायें।
- ❖ बाह्य परजीवी तथा अन्तः परजीवी की दवा पिलवायें।
- ❖ बांझपन की चिकित्सा एवं गर्भ परीक्षण करायें।
- ❖ बरसीम का बीज तैयार करें।

### सब्जियों की खेती

- ❖ ग्रीष्म कालीन सब्जियों जैसे लोबिया, भिन्डी, लौकी, खीरा, खरबूजा, तरबूज, नेनुआ, आदि की बुवाई यदि न की हो तो पूरी कर ले।
- ❖ ग्रीष्म कालीन सब्जियों, जिनकी बोआई फ़रवरी माह में कर ली गई थी, उन फसलो की हर सातवे दिन के अंतर पर सिचाई करते रहे तथा आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करें।
- ❖ लहसुन की फसल में निराई-गुड़ाई व सिचाई करें।

### फलों की खेती

- ❖ आम में भुंगगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास (1.0 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) घोलकर छिड़काव करे

## फूलो की खेती

- ❖ गर्मी वाले मौसमी फूलो जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सुन्फलोवर, कोचिया, नारंगी, गोमफ्रिना आदि के बीजो को एक मीटर चोडी तथा आवश्यकतानुसार लम्बाई की क्यारिया बनाकर बीज की बोयाई कर दे ।

सहयोग			
नाम	पदनाम	विषय	मो0न0
श्री आशीष कुमार सिंह	प्रक्षेत्र प्रबंधक	अनुवाशिकी एवं पादप प्रजनन	07752941868
श्री जितेन्द्र कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (लैब टेक्निशियन)	पौध संरक्षण	08887725608
श्री शुभम पाण्डेय	सहायक	-	08317019891
श्री संजय कुमार यादव	ड्राईवर	-	09415853387
श्री दिनेश राव	ड्राईवर	-	09695713464
श्री जयप्रकाश सिंह	स्किल्ड सपोर्टिंग स्टॉफ	-	09140533437
श्री अभिमन्यु वर्मा	स्किल्ड सपोर्टिंग स्टॉफ	-	07379390081

सह-सम्पादक मंडल			
डा0 विवेक प्रताप सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन	07651922058
डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव	विषय वस्तु विशेषज्ञ	उद्यान	08787264166
डा0 राहुल कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	कृषि प्रसार	07007275688
श्री अवनीश कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	09792099943
श्री संदीप प्रकाश उपाध्याय	विषय वस्तु विशेषज्ञ	मृदा विज्ञान	09621437547
श्रीमती श्वेता सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	गृह विज्ञान	09453158193

संकलन एवं सहयोग			
नाम	पदनाम	विषय	मो0न0
श्री गौरव कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)	कम्प्यूटर	07651922058

सम्पादक			
डा0 संदीप कुमार सिंह			
(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)			
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर(उ.प्र.)			
Mob no. 09453721026; Email – <a href="mailto:gorakhpurkvk2@gmail.com">gorakhpurkvk2@gmail.com</a>			
website - <a href="http://www.mgkvk.in/">http://www.mgkvk.in/</a>			